गीत न्याय और आज़ादी के...

साहस को एक सलाम...

सहयोगी संस्था

एक्शनएड, भोपाल

साझेदार संस्थाऐं

दलित संघ, होशंगाबाद

प्रगति ग्रामीण विकास संस्था, बैतूल

अम्बेडकर विचार मंच, हरदा

जन साहस संस्था देवास

दलित वंचित विकास मंच (म.प्र.)

दलित अधिकार अभियान म.प्र.

मुख्य पृष्ठ : स्वाती

प्रकाशक : दलित अधिकार अभियान म.प्र.
ई.-8/63, भरत नगर, शाहपुरा,
भोपाल (म.प्र.)-462 016
संपर्क : 91 755 - 4218563
E-mail : dalitadhikarabhiyan@gmail.com

मुद्रक : महक ग्राफिक्स एण्ड ऑफसेट, भोपाल
एल.एम.-13, बी.-ब्लॉक, मानसरोवर, कॉम्पलेक्स,
भोपाल : 0755-4013434

नोट : केवल सीमित वितरण के लिए।

भूमिका

साथियों...

"गीत न्याय और आजादी के "यह गीत की किताब समाज में सामाजिक जातिव्यवस्था से आजादी के लिए चल रहें अविरत संघर्ष की ही देन है। दलित वंचितो के विद्रोह को मनुस्मृति द्वारा रचित जातिव्यवस्था भी दबा नहीं पायी। सदियों से जारी सामाजिक संघर्ष में गीतों, कविताओं और भजनों ने एक हथियार की तरह अपनी उपयोगिता सिध्द की है। हमारें मूलनिवासी संत जैसे कबीरदासजी, रविदास आदि ने अपनी अनहद कृतियों के द्वारा हमारे अल्हड़ और भटके हुयें समाज को जागृति प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, ऐसें कई महत्वपूर्ण समाज में चेतना फैलाने वाले उदाहरण हमें हमारे के पन्नों में मिलेंगें। दलित अधिकार अभियान, मध्यप्रदेश को यह गीत की किताब आपके समक्ष सादर करतें हुयें अत्याधिक हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है।

हमारी प्रेरणा स्त्रोत जिन्होनें आंसुओं से अंगारें बनाये, अपने पंखों से आकाश को संभाला, रुढ़ीवादी परम्परा के पहाड़ों को तोड़कर जिन्होनें विद्रोह के सुरंगे तैयार की ऐसी ज्ञानमाता, समता की छाया सावित्रि बाई फुले आज भी हमें एक प्रकाशपुंज की तरह प्रकाशित करती है।

कबीर कला मंच अपने शब्दों मे इस प्रकार से कहता है :-

ज्योतिबा फुले, मां सावित्रि फुले को प्रेम से साहू..... कर पुकारा करतें थे

"साहू, जलती मशाल
साहू, अग्नि की ज्वाला
साहू, शोषितों की ढाल
साहू, मुक्ति के कदम"

यह केवल शब्द नही "हथियार" है मूलनिवासीयों की "आवाज" है। भीम, फुले, शाहु, साहु का यह स्वर है। एक बार फिर हम तैयार है।

आज दलित समुदाय का पितृसत्ता, नवउदारवाद व ब्राह्मणवाद के खिलाफ

संघर्ष जो मध्यप्रदेश में पनप रहा है। गांव-गांव से संघठनों के माध्यम से महिला, पुरुष, युवा, बच्चें उठकर इस शोषणकारी व्यवस्था जो घर के बाहर व घर के अन्दर मानव के अस्तित्व को छिनकर हिंसा और अत्याचार कर रही है। इस अन्यायकारी व्यवस्था से सवाल पूछ रहें है उन्हें यह गीत की किताब मजबूती देने में कारगर साबित होगी। इस किताब के प्रसार माध्यम बनाकर हमारा यही लक्ष्य है कि अलग-अलग स्तरों पर संगठन की उपयोगिता बढ़ सके तथा न्याय के लिए आवाज बुलंद हो।

प्रदेश के अलग-अलग अंचलो के वे संगठन के साथी जिन्होनें अपनी संघर्ष की आग को कलम के माध्यम से राग बनाकर संगठनों में जान फूंकी है तथा सोते हुयें समाज को जगाने का कार्य किया है उनके इन्ही शब्दों को दलित संघर्ष की कड़ी में समेटकर सहेजने का इस किताब के माध्यम से प्रयास है।

इस आशा के साथ कि आपके गरीमा एवं न्याय के संघर्ष में हमारा भी साथ हों...

जय भीम, जय भारत

आपके संघर्ष में आपकी साथी

दलित अधिकार अभियान, (म.प्र.)

गीतों की सूची

संगठन के गीत **पृष्ठ**

- संगठन की ओर चलो
- जीतेंगे-जीतेंगे
- नया इतिहास
- आओ साथियों आओ
- हे खुदा तेरा घर मैनें बनाया
- गांव-गांव से उठो
- समता हमारी जंग है
- सत्ता के दिवानों ये देश ना बेचो
- वो बात करो पैदा
- चाहिए दलित सत्ता
- जाग भैय्या मोरे
- चलो साथ हमारे
- संगठन बनाओं घबराओं मती
- हम तो महंगाई की चक्की में चूर
- घर-घर झंडा लगने दो
- ऐका करो भाई रे
- भोर भई जाग
- चलो रे चलो साथी
- मूल निवासी आओ रे
- अंगारों पे चलता जा
- हम नील गगन के पंछी

बाबा साहेब के गीत

- बाबा तेरी जय हो
- भिम का झंडा लो
- महु नगर में भीम
- अमर रहेगी भीम राव तेरी...
- जनता मगन है
- महिमा बाबा साहेब की
- धन्य-धन्य हो भारत माता
- चलो-चलो भीम जी के सत्संग

महिलाओं के गीत

- इरादे कर बुलंद
- कौन कहता है जन्नत इसे
- वक्त पुकारता है
- मिलकर हम नाचेंगे गायेंगे
- तोड़-तोड़ के बंधनों को
- जमाना आयो चेतन को
- चिड़ियॉ बोलन लागी
- संगठन ताकत हमारी
- तुम्हारा साथ
- मैनें सपना एक सुहाना देखा
- हाथ जोड़कर नारी बोली
- नारी का ये भाग्य विधाता

बच्चो के गीत

- छोटी-छोटी आँखों में सपने
- हम फूल जैसे बच्चे
- बेटी हूँ मैं
- शिक्षा की रेल गाड़ी
- बाल भीम समूह
- देख के बोलो कौन सी गाड़ी
- लिखेंगे एक नया किस्सा
- हम है जहां हम है किशोरी
- मैं तो नाचूंगी
- भीम राव की बेटी

कबीरवाणी

- कोई सुनता है गुरू ज्ञानी
- हिन्दू रे कहता राम हमारा
- बिना गुरू ज्ञान न पाया
- चेत रे नर चेत रे
- जरा धीरे-धीरे गाड़ी हाको

संत रविदास जी के गीत

- नृप को आदेश सुनो पंडित तैयार भयो

संगठन की ओर चलो

✍सुन्दर सिंह

संगठन की ओर चलो, संगठन की ओर
जिंदाबाद गांओ चलो, संगठन की ओर... (ध्रु)

अभी तक बहुत ढोया, धर्म के पाखंडो को
स्नानदान खुब किया, दान दिया पंडो को
पूजा पाठ कर देखा, कुछ ना काम आया है
जातिवादी गुंडो ने, और कहर ढाया है
ज्योती बा की राह चलो, तभी होगी भोर

.... संगठन की ओर चलो

पड़ोसी का खेत छिना, सावधान हो जाना
बचेगा ना तेरा भी, गफलत मे मत सोना
घर जला पडोसी का, कल को तेरी बारी है
आज उसको मारा है, कल को गती तेरी है,
एक साथ हो जाओं, जुल्मी है कठोर

... संगठन की ओर चलो

आज कितनी बेटीयॉं, किस्मत को रोती है
गॉव, गली, थानों में, वारदात होती है
कहीं खैरलांजी, कहीं करनावद होता है
बस्तीयॉं दलितों की, जल के खाक होती है
संगठन के बिना कोई राह नहीं और

... संगठन की ओर चलो

सत्ता ज्ञान गरिमा, सब हमसे कैसे छुटा है
कौन आया बाहर से, किसने हम को लुटा है
हमको गरीबी में, किसने धकेला है
अत्याचार किसने किए, और किसने झेला है
बुद्ध, भीम, शाहू, फुले दिखाते है छोर

... संगठन की ओर चलो

जीतेंगे-जीतेंगे ये जंग हम

✍डॉ. गोपाल नारायण आवटे

जीतेंगे–जीतेंगे, ये जंग हम जीतेंगे
छुआछुत के खिलाफ
अन्याय के खिलाफ
हम संघर्ष करेंगे...
जीतेंगे–जीतेंगे ...

दो रोटी की खातिर
अपनी इज्जत की खातिर,
मान सम्मान के खातिर
हम संघर्ष करेंगे...
जीतेंगे–जीतेंगे ...

सिर पर छत की खातिर
अपनी शिक्षा की खातिर
हम संघर्ष करेंगे...
जीतेंगे–जीतेंगे ...

अपने हक के खातिर
अपने बच्चों के खातिर
हम संघर्ष करेंगे...
जीतेंगे–जीतेंगे ...

हम भाई एक हैं
माता बहने एक हैं
हम संघर्ष करेंगे
जीतेंगे–जीतेंगे ...

लहू से लिख दो नये इतिहास को

✍डॉ. गोपाल नारायण आवटे

लाल सलाम – लाल सलाम
लाल सलाम– लाल सलाम।
लहू से लिख दो, नये इतिहास को
लहू से लिख दो, नये कलाम को।
लाल सलाम–लाल सलाम
लाल सलाम–लाल सलाम

ज़िन्दगी भीख में मिलती नहीं
अधिकार भीख में मिलते नहीं
तोड़ो अब खामोशी,
छोड़ो अब आराम।
लाल सलाम– लाल सलाम
लाल सलाम– लाल सलाम

बूढ़ी–बेईमान व्यवस्थाएं
ढो रहे कान्धों पे
करना होगा मिल के
अब सब को संग्राम।
लाल सलाम–लाल सलाम
लाल सलाम–लाल सलाम

देश की धरती, सहेगी कब तक?
देश की जनता मरेगी कत तक?
छोड़ो डरना तुम,
मिल के निकालों तुम परिणाम।
लाल सलाम–लाल सलाम
लाल सलाम–लाल सलाम

आओ साथियों आओ

✍डॉ. गोपाल नारायण आवटे

आओ साथियो आओ
आओ बहनों आओ
गाओ साथियों गाओ
गाओ बहनों गाओ।
हम चलेंगे मिल के
हम लड़ेंगे, मिल के।।
आओ साथियो आओ
गाओ बहनों गाओ।

गायेंगे तो गूंज उठेगी
ये आसमां धरती,
लड़ेंगे तो जीत लेंगे
ये आसमां धरती।।
आओ साथियो आओ
आओ बहनों आओ।

मिलके साथ चलने पे
मिल जाती है मन्जिल
मिल के साथ लड़ने से
हट जाती है मुश्किल।।
आओ साथियो आओ
आओ बहनों आओ।
हम चलेंगे मिल से
हम लड़ेंगे मिल के।

देश की जिन्दा कौमें
नहीं करती इन्तजार
बढ़ के ले लो तुम
अपने अधिकार।।
आओ साथियो आओ

हे खुदा तेरा घर मैंने बनाया

✍डॉ. गोपाल नारायण आवटे

हे खुदा तेरा घर मैंने बनाया ।। धृ।।
कुछ गारा-पानी ईंट जोड़ के
तेरी मस्जिद को बनाया। ।।1।।

हे राम तेरी मूरत को मैंने बनाया
पत्थर में छिपा था तू
छैनी हथोड़े से मैंने निकाला। ।।2।।

मस्ज़िद मन्दिर दोई जगह
मैं तुझ को ना पाया।
तेरा दीदार अपने भीतर पाया। ।।3।।

मुल्ला, पॉडित दोऊ लड़े
धर्म को ले कर नाम।
रामायण कुरआन दोऊ रोएं
ले ले इनको नाम।। ।।4।।

मोहे बांटा तुर्की हिन्दू में
रख के मूल्ला पड़ित बैर
मैं रोना कहाँ रोऊं
मोहे नहीं कहूं चैन।। ।।5।।

गाँव-गांव से उठो

✍नेपाली लोक गीत

गांव–गाँव से उठो बस्ती–बस्ती से उठो।
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो।

हाथ में जिसके कलम है कलम लिये उठो।
बाजा बजाने वालों तुम बाजा लिये उठो।
गाँव–गाँव से उठो...

हाथ में जिसके औजार है औजार लिये उठो।
पास में जिसके कुछ भी नहीं आवाज लिये उठो
गाँव–गाँव से उठो...

वो बात करो पैदा

✍अज्ञात साथी से

वो बात करो पैदा तुम अपनी जबानों में
दुनिया भी कहे कुछ है इन भीम दिवानो में...
ईमान कि ऐ दौलत मिलती नही महलो में
ये चीज तो मिलती है मुफलीस के मकानो में...
गर भीम नही होते, तो हम आज कहा जाते
जुल्मों मे पले है हम, उबरेंगे तूफानो में...
हक अपना बराबर हम, अब छीन के ले लेगे
है आज भी ये ताकत, बहुजन के जवानो में...
छोटो को गिराओ ना नजरो से बडे लोगो
हीरे भी निकलते है पत्थरो की खदनो में...

समता हमारी जंग

(तर्ज–इज्जत वतन की हम से है)

✍सुंदर सिंह

समता की हमारी जंग है, सम्मान ब्याय की जंग है,
अभियान है हम दलितो का...।

आजादी मे चाहते है हम, अपनी भी आजादी,
पीढीयो से सहते आये, अपमान और बरबादी।

आजादी मैला ढोने से, गुलामी से आजादी,
देश के माथे पर कलंक सी, इन रूढ़ीयों से आजादी।

आजादी के बाद भी, सारे देश मे छुआछूत है,
जिंदा रहने पर भी छित, शमशानो मे भी छित है।

हिंसा को रोकेंगे अब हम, हत्याएं दलितों की,
पुरूषो की और महिलाओ की, और दलितो के बच्चो की।

इन्सानों को जिंदा जलाते, हिम्मत शैतानों की,
दलित एकता से रोकेंगे, ये करतूत हैवानो की...।।

हर गॉव शहर में होगा संगठन, तान चलेंगे सीना,
गॉव–गॉव मे खडी करेंगे, जयभीम की हम सेना।।

एक करेगा पुकार तो, सब मिलकर डट जायेंगे,
रोज–रोज के मरने से, एक बार ही कट जायेंगे...।

एट्रोसिटी का एक्ट हाथ मे, संविधान बाबा का,
आगे बढेगा बढते रहेगा, कारवा ये दलितों का...।

संसाधन और सत्ता में, हम चाहते अपना हिस्सा,
अपमानों का, दरिद्रता का, खत्म करेंगे किस्सा।

समाज मे सम्मान चाहते, आग लगी है मन में,
नही रहेंगे, नही जीयेंगे, अब के पीछडेपन मे....।

खत्म करेंगे सारे मिलकर, पुंजीवादी सपनो को,
जाति व्यवस्था, पितृसत्ता और बैरी वैश्विकरण को।

उदारवाद है नाम लूट का, खुली छूट चोरो को,
निजीकरण मे नौकरीयों की, बंदिश है दलितो को...।

समझ गये हम मूलनिवासी, अब के चुप ना रहेंगे,
घृणित प्रथाओ, और हिंसा का, हां हम अंत करेंगे।

हां ब्राह्मणवाद से जंग है, जाति हां जाति प्रथा से जंग है,
हां पूंजीवाद से जंग है, पितृवाद से जंग है अब मिलकर लड़ना होगा।

समता की हमारी जंग ...

नर्मदा घाटी

✍साभार-नर्मदा बचाव आंदोलन
(बरगी बांध विस्थापित संघ)

नर्मदा की घाटी में अब लड़त जारी है,
चलो उठो, चलो उठो, रोकना विनाश है।
विकास के ही नाम पर बांध का ये खेल है,
सोच लो, जान लो लाभ-हानि कितनी है।

सिंचाई की भी भूल है, दल-दल तो होनी है,
गन्ने के खेत में मजदूर पिसाया है।
बिजली की जाल है, शहरों की चाल है,
तापी में न बन सका, वही हाल होना है।

न जांच है, न परख है, झूठे हिसाब हैं,
करोड़ों की लागत, गुजरात की भी लूट है।
राजनीति साफ है, गद्दी पांच साहै हैं,
बांध फिर हो ना हो, अपना-अपना रोना है।

मजदूर का घर तोड़कर, किसान का हल छीन कर,
देखो ये तो छोड़ेंगे, लाखों को उजाड़ कर।
न जमीन हैं, न दाम है, पुनर्वास का नाम है,
बुलाकर भगाने का सारा इन्तजाम है।

मंत्री का ऐलान है, पार्टी का आह्वान है,
भाई अपना सोच लो, ठेकेदार का राज है।
लाभों का वादा है: मानव का सौदा है,
पचास साल के लिए पीढ़ियों का रोना है।

सत्ता के दिवानों ये देश ना बेचो

(तर्ज–दुल्हन तो जायेगी दुल्हे राजा के साथ)

✍सुन्दर सिंह

सत्ता के दिवानो.....ये देश ना बेचों
फिर गोरो के हाथ.....क्यों गद्दारी करते हो यूं जनता के साथ.....

तेरा दिन मे तूमने तीन तेरा कर दिए, गोरो के जेब सारे लायसेन्स से भर दिए,
कर दिया किसानो को गैट के हवाले, देशी थे बिज सब विदेशी कर डाले,
अब खेती भी बना दी तुमने घाटे की सौगात.....
क्यों गद्दारी करते हो ...यू जनता

गोरो के बैंको के ऐजंट तूम बनते, अपने ही लोगो की तुम क्यौ ना सूनते
लाखो आदिवासी कर दिए बेघर, क्यौ ऐसा करते हो तुम देसी होकर
झुठे वादे झुठे चेहरे... झुठी तुम्हारी बात...
क्यों गद्दारी करते हो ...यू जनता

लाखो किसानो को फांसी पे टांगकर, तूमको क्यौ दर्द नाही अपनो को मारकर
कंपनीयो को क्यौ लुटने बुलाते, क्यौ देशवासीयो को ऐसे सताते
है खाने के, दिखलाने के अलग तुम्हारे दात...
क्यों गद्दारी करते हो ...यू जनता

जंगल भी बेच रहे हो, बेचें पहाड़ है, पाणी समंदर बेचा, बेचा इमान है
देश को ऐसे टुकडे टुकडो मे बेचते, देश के बिक्री को सेज ऐज क्यौ कहते
ईस्ट इन्डीया, एक कंपनी...तूम लाए पुरी बारात....
क्यों गद्दारी करते हो ...यू जनता

भोर भई जाग!

✍ भोर अभियान, म.प्र. से साभार

अरे... भोर भई जाग, आओं बदले रे भाग...
बदले ये चेहरा समाज का.....

सदियों से जो गलत रूढिया, समाज को डसते आई
हिम्मत लेकर साथ उठों, अब इनको बदलो भाई
अरे भोर भई जाग...

ऐसी कोई रात नही है, जिसका नही सबेरा
एक दीया तो जला के देखो, रूकता कहा अंधेरा
अरे भोर भई जाग...

ऐसा क्या है इस समाज ने, क्यों हमको ठुकराया
मिलकर सोचों क्यों हमकों, सम्मान नही मिल पाया
अरे भोर भई जाग...

बच्चे ही तो आनेवाला कल है, इन्हे बचाओं
शोषण मे मत झोंको इनका, कल खुशहाल बनाओं
अरे भोर भई जाग...

जाग भैया मोरे

(तर्ज-आ रही है बहना आ रही है, ग्राम सभा मे आज बहना आ रही है)

✍सुन्दर सिंह

जाग भैया अब तो जाग भैया...
लिखने को अपने भाग, अब तो जाग भैया....
जाग बहना, अब तो जाग बहना,
लिखने को अपने भाग, अब तो जाग बहना। ।। धृ।।

जय भीम का नारा तु थोड़ा सा सीख ले...
अपने दिवारो पे जयभीम तू लिख ले...
त्याग भैया अब तो त्याग भैया, डर के जिने का रिवाज, ।।1।।
अब तो त्याग भैया.....

रविदास और, कबीर को रोज रोज गाइले.....
संगठन की मिटिंग मे थोड़ा सा आइले.....
लाग भैया थोड़ा लाग भैया, संगठनो के साथ, ।।2।।
अब तो लाग भैया।

अत्याचार अधिनियम कानून को जान ले....
अपने संगठन की बातो को मान ले.....
काम भैया तेरे काम भैया, बिना रूके होंगे, सबरे कामभैया।।।3।।

सुचना के कानून को बगल मे टांगना...
पंचायत जाना और जानकारी मांगना...
मांग भैया तु भी मांग भैया, सुचना के कानून से आज, ।।4।।
जानकारी मांग भैया...

जानेगा, समझेगा, सोचेगा जब कुछ,लड़ेगा,
बढ़ेगा तब होगा सब कुछ।
तो फिर.... जाग भैया अब तो जाग भैया...।।5।।

चलो साथ हमारे...

✍संकलन-राज कुमार
बरगी बांध विस्थापित संघ से साभार

दुख से टूटे हारे चलो साथ हमारे...
भिम जी तुम्हे पुकारे..
फूले तुम्हे पुकारे...
दलित बहुजन सारे...
चलो साथ हमारे...

साथ चले तो भैया सब जग अपना
सुरज चांद सितारे... चलो साथ हमारे...

साथ चले तो भैया भगते है गुंडे...
मनुवाद के टुटते है झंडे...
अत्याचारी भगे रे ...चलो साथ हमारे....

साथ रहेंगे भैया साथ चलेंगे...
कोई ना मरेंगे अब कोई ना जलेंगे...
साथी हाथ बढ़ा रे...चलो साथ हमारे...

साथ चले तो भैया राज है अपना...
दिल्ली भी अपनी, भोपाल भी अपना
अपनी होंगी सरकारे.... चलो साथ हमारे...

जल जंगल और जमीन अपनी,
पहाड अपने और नदीया भी अपनी
अपने खजाने सारे....चलो साथ हमारे...

संगठन बनाओ घबराओ मती

✍देवराम दमाडे

अधिकार मिला है, ठुकराओ मति,
संगठन बनाओ, घबराओ मती।

संगठन बनाओ घबराओ मती...

तीन सूत्र बाबा भीम जी के पाओ,
शिक्षा संगठन और संघर्ष बढाओ
आगे बढोगे होगी उन्नती...

संगठन बनाओ घबराओ मती...

अपने हक-अधिकार को है पाना,
दुश्मनो से कभी ना घबराना,
जातीवाद की होगी बूरी गती...

संगठन बनाओ घबराओ मती...

कब तक बहना जुल्म सहोगी,
जुल्मो को सहके चुप ही रहोगी,
लढकर ही जंग है सबने जीती...

संगठन बनाओ घबराओ मती...

अम्बेडकर बाबा तुमको जगावे,
शिक्षा के ज्योति मे रास्ता दिखावे
सुरज को छुलो तूम डरो मती...

संगठन बनाओ घबराओ मती...

महंगाई की चक्की

✍सुन्दर सिंह

हम तो महंगाई के चक्की मे चूर, किसको कहे ये, है किसका कसूर
तुने भी वोट डाला, मैने भी वोट डाला...
ठंडागार हो गया अब्बा अब्बा...

घर मे नही है आटा बिबी ने बडा डाटा,
गया बाजार तो बेपारी ने काटा
आटे ने बोला टाटा और दाल ने मारा चाटा...
ठंडागार हो गया अब्बा अब्बा...

सुबह को कुर्ता महंगा, दोपर को धोता महंगा,
और शाम को देखा हुआ, लहंगा भी महंगा
क्या मिटटी पत्थर खाना, क्या नंगा ही रह जाना,
कैसा आ गया जमाना अब्बा अब्बा...

ये दिल्ली वाले भाई, महंगाई कैसे आई?
जनता की तुने तो, चटनी बनायी
तू कैसा इतना मोटा, मै कैसे सुखा छोटा
चमत्कार हो गया, अब्बा अब्बा...

मेरी भी बढी दाढी, बीबी की फटी साड़ी,
पटरी पे पलटी ये जीवन की गाड़ी
लुंगी का हुआ लंगोटा, पैजामा हो गया छोटा
तार-तार हो गया, अब्बा अब्बा...

ये पुंजीवाद का तोहफा, तो लेना ही पड़ेगा,
लगता है महंगाई, में मरना पड़ेगा
अब के गलती ना करना, ऊपर पहूचेगा वरना....
वोट सोच के अब देना, अब्बा अब्बा...

ऐका करो भाई रे

(तर्ज- पाणी रोको पाणी रोको)

✍सुन्दर सिंह

ओ हो, ओ हो हो...
ऐका करो, ऐका करो, ऐका करो, भाई रे ...
ऐका बिन नहीं, सम्मान की लड़ाई रे ...
ऐका करो, ऐका करो, ऐका करो, भाई रे ...
भूमि से जुड़ी है, सम्मान की लड़ाई रे ...

अत्याचार है गॉव मे, भेदभाव की छांव मे,
भूख गरीबी लाचारी की, बेड़ी पड़ी है पांव मे ...
आदिवासी का मान नहीं, दलितों का सम्मान नहीं,
बहने चुप है क्या-क्या सहती, कोई किसी का ध्यान नहीं ...
वक्त नही चुप रहने का, वक्त आज है कहने का ...

चुप रहेगा.... डर जायेगा....डर डर के तू मर जायेगा
चुप रहने से नहीं जुल्मों का तोड़ रे.....
चुप रहने से हुआ भाग्य कमजोर रे....
हो हो हो.....हो हो हो....

ऐका करो, ऐका करो...

अत्याचार दलितों पर, अत्याचार है बहनों पर,
आदिवासी उजड़ रहे है, अत्याचार गरीबों पर।
महंगाई की मार है, रोज के अत्याचार है,
जिंदा मुर्दा रोज जल रहे, जलते ये घर-बार है।
जुल्म बढ़ा सरकारो का, कहर बढ़ा है दमदारों का,

रोज इज्ज़ते लुट रही है, राज हुआ हैवानों का,
जमीदारी बढ़ने से, बढ़े अत्याचार रे...
पूंजी बढ़ने से होता, गरीबो पर वार रे...
हो हो हो.....हो हो हो.....

ऐका करो, ऐका करो...

मजदूरी मजबूरी है, रोज गले पे छुरी है,
जींदा रहने जमीन नही, मरने को भी जगह नही।
दफन करे तो कहा करे, मरना है तो कहा मरे,
नदी नही ना ताल है, जल जंगल, ना पहाड़ है
कभी ज़मी थी अपनो की, दलित, आदिवासी ओर घुमंतू की।

ऐक लुटेरा आया था, जातिवाद वो लाया था,
उसने सारा कहर किया, जीवन सारा ज़हर किया।
कब्जा तब से औरों का, जमीदारों, सरकारो का,
बेईमानी से लुटा गया, माल हो गया चोरों का
जमीन तो देश है, देश की लडाई रे...
जमीन के बिन देश किसका है भाई रे...
हो हो हो हो....

ऐका करो, ऐका करो...

चलो रे चलो साथी

✍शंकर तड़वाल, अलीराजपुर

चलो रे चलो साथी
हां ... एक साथ आयेंगे संगठन बनायेंगे
चलो रे चलो साथी....
हां ... ये मजदूरो का संगठन किसानों का संगठन
ये दुनिया का संगठन ये मुखियो का संगठन–
हम सारे मिलकर बनायेंगे संगठन
चलो रे चलो साथी ...
हां... हम कष्ट ना उठाते तो खेती नहीं बनती
हम धान नहीं उठाते तो कोठी नहीं भरती
हम बोझ ना उठाते तो सेठ नहीं बनते
हम भूखे प्यासे क्यों हैं वो खाक मस्त क्यों हैं
अपना पेट खाली है उनकी रोज दिवाली है
चलो रे...
हां ... फेक्ट्री में कष्ट अपना वो फेक्ट्री के मालिक
बंगले में कष्ट अपना वो बंगले के मालिक
बर्बाद हम हुए हैं वो आबादी के मालिक
हम जिन्दगी जलाई पर उनको रोशनाई
सूरज को जगानें वाले हम ही अंधेरे में क्यों
चलो रे...
हां ... जब रोड हम बनाया तब कार उनकी चलती
जब गाड़ी हम बनाई तब चेन उनको मिलती
जब चाबी हम बनाई तीजोरी उनकी खुलती
जब खून पसीना अपना मेहनत से जीना अपना
वो बने हैं मालामाल अपना हाल बेहाल हैं।
हां... ये जले हुए आते संगठन बनाना होगा
ये इन्कलाबी आखो सिंगार बनाना होगा
ये बूंद पसीनो से संघर्ष चलाना होगा
लहु जिगर अपना झण्डा उठाना होगा
जालीमों के पजों से देश को बचाना हैं।

मूल निवासी आओ रे...

✍सुंदर सिंह

मूलनिवासी आओ रे...मूलनिवासी गाओ रे...
लो कदम बढाओ रे...सबको अब जगाओ रे...
आज भी ये देश है, ब्राम्हणवादी हाथ में
पक्ष और विपक्ष है, ब्राम्हणवादी हाथ में
प्रजातंत्र देश का अब तो तुम बचाओ रे... मूलनिवासी आओ रे...

छुआछूत गांव में, जुल्म भी है साथ में
लूट रही है इज्जते, दिन में और रात में
जुल्म के हैवान को अब सबक सिखाओ रे... मूलनिवासी आओ रे...

दलित आदिवासीयो, मिट रहे हो साथीयो
अल्पसंख्य भाईयो, कट रहे हो साथीयो
दलित, पीड़ित, वंचितो, अब तो साथ आओ रे... मूलनिवासी आओ रे...

तुम ही मूलनिवासी हो, देश ये तुम्हारा है
जमीं ये तुम्हारी है, आसमां तुम्हारा है
अपनी जमीं अपना आसमान पाओ रे...मूलनिवासी आओ रे...

पिछड़ा वर्ग साथियों, कैसा तु किसान है
आत्महत्या कर रहा, सस्ती तेरी जान है
खुद को ना जला, जला दे पुंजीवाद रे... मूलनिवासी आओ रे...

नीजीकरण नाम है, नीचता का काम है
आरक्षण मिटाने का पुरा इन्तजाम है
वैश्विकरण उदारता खतरनाक जाल है
छुपा हुआ भेड़ीया, मेमने की खाल है
पहचान करो भेड़ीये की, दे भगाओ रे.... मूलनिवासी आओ रे...

सबके साथ न्याय हो, हम तो ये ही चाहते
समता, बंधुभाव हो, हम तो ये ही चाहते
रामराज्य नहीं, भीम राज्य लाओ रे... मूलनिवासी आओ रे...

अंगारों पे चलता जा

✍डॉ. गोपाल नारायण आवटे

अंगारों पे चलता जा --ss--^{2}
आहों को दबा के
इंकलाब गाता जा --ss--^{2}

गाता जा – गाता जा।।

जो राह चुनी तूने
उस पे ss कांटे है --^{2}
जो राह देगा तू
उस पे फूल बिछे है
घबराना छोड़ तू
हिम्मत जोड़ तू
आहों को दबा के
इंकलाब गाता जा।

गाता जा – गाता जा।।

हर सांस से जुड़ी है मौत तेरी--^{2}
तू डरना छोड़ के दे सब को जिन्दगी।

रूकना छोड तू
मुड़ना छोड़ तू
आहों को दबा के
इंकलाब गाता जा।

गाता जा – गाता जा।।

इतिहास के पन्नों पे
नाम ना हो तेरा
जनता लेगी नाम तेरा
गिरना छोड़ तू, झुकना छोड़ तू
आहों को दबा के, इंकलाब गाता जा।

गाता जा – गाता जा।।

दलितों की नैया

(तर्ज–उठो धना मगरे पर बोल रहा कौवा)

✍सुन्दर सिंह

चलो चले भीम जी के, संग मोरे भैया
तब ही तो बचेगी, दलितों की नैया...
चलो चले कबीरजी के, संग मोरे भैया
तब ही तो बचेगी, दलितो की नैया...

चलो चले बिरसा के, संग मेरे भैया
तब ही तो बचेगी, आदिवासियों की नैया...
क्यों तपता जुल्मों के, धुप मे रे भैया
भीम जी ने कर दी ह, तेरे लिए छैया...
चलो चले भीम जी के संग ...

छुआछूत जिसमे, झुठ सारी पोथीया
दलितो को भुलाने की है, भुलभुलैया...
चलो चले भीम जी के, संग मोरे भैया
घट रही कमाई,नही पैसा रूपैया
महंगाई छाती पर, करे ताता थैया....
चलो चले भीम जी के संग ...

कैसा धर्म कैसा धर्म, दैया रे दैया
दलितो को काटकर, बचाते है गैया...
चलो चले बिरसा के संग मेरे भैया
अपनी है जमीन,अपने जंगल साथीया
अपनी ही नर्मदा है, और गंगा मैया...
चलो चले भीम जी के संग ...

नेता अपने मुददे अपने, अपन ही लडैया
जंग अपनी,जीत अपनी, हैया हो हैया....
चलो चले भीम जी के, संग मोरे भैया
लाल निले झंण्डो को, जोड के चलैया
सब मिलकर चलो, अधिकार ले लो भैया...
चलो चले भीम जी के संग ...

बाबा तेरी जय हो...

✍डॉ. गोपाल नारायण आवटे

जय हो – जय हो – जय हो
जय – जय – जय
बाबा तेरी जय हो, तेरी जय हो, तेरी जय हो।।

तू ने हमें राह बताई
जीना सिखाया,
तू ने हमें राह दिखाई
लड़ना सिखाया।
बाबा तेरी जय हो, तेरी जय हो, तेरी जय हो।।

तू हमारा आदर्श, तू हमारी हिम्मत।
तूने जो राह बताई, पढ़ना सिखाया।
बाबा तेरी जय हो, तेरी जय हो, तेरी जय हो।।

काँटो भरी राहों पे, तू चलता रहा।
फूलों भरा रस्ता तूने, हम को दिखाया।
बाबा तेरी जय हो, तेरी जय हो, तेरी जय हो।।

शिक्षित बनो, एक रहो, संघर्ष सिखाया
तूने सबको आगे चलना सिखाया।
हो बाबा तेरी जय हो, तेरी जय हो, तेरी जय हो।
हो बाबा तेरी जय हो, तेरी जय हो, तेरी जय हो।

भीम का झंडा लो

(तर्ज–कव्वाली)

क्यों बेबसी मे जी रहे मौताजी को लिए...
अब जाग उठो! भीम का झंडा नया लिए..

.

ये घर भी ना रहेगा, ये दर भी ना रहेगा
सर झुकाते रहोगे तो, सर भी ना रहेगा

क्यों प्यास बुझाते हो आसुओ को पिए
अब जाग उठो भीम का झंडा नया लिए...

आपस के भेद छोडो, ये उच निच तोडो
सब एकता मे आओ, जाति की मेड छोडो
इस जाति और तड से तो हाल ये हुए
अब जाग उठो भीम का झंडा नया लिए...

हजारो मिट मरे है, हजारो शिल लुटे है
ये जाति और तड से, कई नौजवॉ कटे है

शैतान छल रहे है, और बुझ रहे दिए
अब जाग उठो भीम का झंडा नया लिए...

तुम शुर और वीर हो, ये देश तुम्हारा था
जो जहॉन मे है फैला, वह धर्म तुम्हारा था

तुम बुध्द के योद्धा थे, छल कपट से गए...
अब जाग उठो भीम का झंडा नया लिए...

महू नगर मे भीम

(तर्ज-चांदी की दिवार ना तोडी प्यार भरा दिल...)

✍प्रेम भैसारे, हरदा

ग्राम महू मे जन्म लियो है, भीमराव है नाम तेरा
पिता तुम्हारे रामजी है, भीमा बाई ने जनम दिया...

दलितो को अधिकार दिए है, पीढियों से जो दुख मे थे
उनपर भी उपकार किए है, सदियो से जो पिछडे थे
मानव नही तूम महामानव हो.... सबको जिवण दान दिया...

संविधान के बने रचियता, समता का सन्मान किया
बंधुता और स्वतंत्रता का, देष को सुविचार दिया
2 साल और 11 महिना रात दिन जब काम किया...

शिक्षित बनो संगठित रहो, संघर्ष करो का मंत्र दिया
दुनिया मे आगे बढने का, तौर तरीका तंत्र दिया
संविधान है साथ हमारे.. जिने का अधिकार दिया...ग्राम महू मे...

भीम गीत

✍राजू बी. आठनेरे
(दलित अधिकार अभियान बैतूल)

जय भीम के गीत गाता चल,
जय भीम के गीत गाता चल।
भीम नाम की शक्ति से
दुनिया को जगाता चल, चल

जय भीम...

भीम ने जितने कष्ट सहे हैं,
लाखों ऐसे जुल्म सहे हैं।
अब न सहेंगे, अब झुकेंगे,
ऐसे जतन तु करता चल, चल

जय भीम...

ऊंची–नीची राहों में भी
हिम्मत से तू आगे बढ़।
दुनिया पीछे छोड़े फिर भी
अपनी राहे चुनंता चल, चल

जय भीम...

मानवता का पाठ पढ़ाते
दुनिया से नाता जोंड़े चल
राहों में पड़े हो, कांटे फिर भी
तू फूल ही फूल बिछाता चल, चल

जय भीम...

अमर रहेगी भीम राव तेरी..

अमर रहेगी भीम राव तेरी, प्यारी अमर कहानी।
तुम ने तो दलितन के लाने, बिता दई जिन्दगानी।।

पिता राम जी राव आपके माता भीमा बाई।
मऊ छावनी जन्म आप का प्राप्त एम.पी.आई.।
पढ़ने लायक हुए भीम जब पिता मर्दशी लाये।
नहीं दाखिला हुआ भीम का पंडित जी इतराए।

हुई है मर्जी अंग्रेजो की भर्ती हो सैनानी।
तुमने तो दलितन के लाने बिता दई जिन्दगानी।।

पढ़ने जावे भीम राव, जब टीचर अलग बैठाने।
गुस्सा में कभी डन्डा मारे, फिर न उन्हे उठावे।।

नल की टोटी कुवन न देवे प्यास। चिल्लावे।
घर में आकर भीमराव जी अपनी प्यास बुझावें।।

होनी होकर ही होती प्रिये नेता चला गया है।
जिन बाहों में लेटा था वह बेटा चला गया है।

ममता के ऑचल में फसा समेरा चला गया है।
उन पुल्टों ने गजब कर दिया लाल न चुके।

चाली तुमने तो हरिजन के लाने बिता दई जिन्दगानी।
पुरखो के खून को अब फिर से अजमाना है।

घर-2 रजक, कह दो संगठन बनाना है।
संगठन हमारा है, संगिठित हो रहना है।

तो ये शुश कभी अपना अधिकार न ले पाति।

।। बेड़ी भीम जय भारत।।

भीम का नाम

✍राजू बी. आठनेरे
(दलित आदिवासी अभियान बैतूल)

भीम के नाम का ढंका बजा है
अब नहीं रूकने वाला
रे बाबा अब नहीं रूकने वाला

भीम ....

जुल्म सितम करने वालो
हमको राहों में रोकने वालो
बहुत सहा है, अब ना सहेंगे
अब नहीं रूकने वाला
रे बाबा अब नहीं रूकने वाला

भीम ....

हम सब भारतवासी है
पहले मूल निवासी है
हमको झुकाया, गुलाम बनाया
अब नहीं बनने वाला
रे बाबा अब नहीं रूकने वाला

भीम ....

अपना देश है अपनी माटी
फिर कैसे लिखी ऐसी पाती
नया लिखेंगे, इतिहास लिखेंगे
अब नहीं झुकने वाले
रे बाबा अब नहीं झुकने वाला

भीम ....

रहेगा जुबा पे भीम नाम

✍राजू खी. आठनेरे
(दलित आदिवासी अभियान बैतूल)

रहेगा जुबां पे भीम नाम
हमारे मरते दम तक
मरते दम तक, सात जनम तक
सात जनम नहीं, जनम-जनम तक

रहेगा...

भीमजी तुमने कष्ट सहे है
दुनिया के गलियों में
जातिवाद के दुष्टों ने भी
कितने जुल्म किये है
अब ना सहेंगे, लड़ते रहेंगे
सात जनम नहीं, जनम-जनम तक

रहेगा ...

मिला किसी का साथ न तुमको
तुफा से लड़े तुम
हमको ऐसा साथ दिया है
खुश ही रहेंगे, खुशियां देंगे
सात जनम नहीं, जनम-जनम तक

रहेगा ...

भारत का संविधान बनाया
हमें अधिकार दिलाया
मान हमारा जग में बढ़ाया
जीना हमको सीखाया।
जीते रहेंगे, आगे बढ़ेंगे।।
सात जनम नहीं, जनम-जनम तक

रहेगा ...

महिमा बाबा साहब की

(तर्ज-आरती की)

✍ शंकर ओनकर, हरदा

महिमा बाबासाहब की, दलितों के मसीहा की...
बाबा महू छावनी, मे जन्म लियो
बाबा रामजी घर, आनंद भयो
बटी मिठाई, मनाई खुशिया, कुल का नाम बढ़ैया की...

उच्च शिक्षा विदेशो, मे प्राप्त करी
सारे विषयो की, पढ़ाई करी
सयाजी राव गायकवाड, छात्रवृत्ती प्राप्त करैया की...

बाबा छुआछूत, समाप्त करी
महाड़ मे पाणी, की लडाई लडी
कालाराम का,मंदीर खुलवा दिया की

दलितों को सम्मान, दिलाव दिया
बाबा ने आरक्षण, हमको दिया
26 जनवरी 1950 मे,संविधान रचैया की...

बाबा ने दिया हमें सम्मान
हाथ मे चमक रहा संविधान
महिला, दलित को अधिकार
आदिवासी आरक्षण के हकदार
नही डर आज, मिला है स्वराज,
हमे अधिकार दिलैया की...
दलितो के मसीहा की...

इरादे कर बुलंद...

✍कमला भसीन

इरादे कर बुलंद, अब रहना शुरू करती तो अच्छा था।
तु सहना छोड़ कर कहना, शुरू करती तो अच्छा था।।

इरादे कर बुलंद ...

सदा औरो को खुश रखना, बहुत ही खूब है लेकीन।[2]
खुशी थोड़ी तु अपने,[2] को भी दे पाती तो अच्छा था।
तु सहना छोड़कर कहना, शुरू करती तो अच्छा था।।

इरादे कर बुलंद ...

दुखों को मान किस्मत, हार कर रहने से क्या होगा।[2]
तु आंसू पोछ कर अब,[2] मुस्कुरा लेती तो अच्छा था।
तु सहना छोड़कर कहना, शुरू करती तो अच्छा था।।

इरादे कर बुलंद ...

ये पीला रंग लब सुखे, सदा चेहरे पे मायूसी।[2]
तु अपनी इक नई,[2] सूरत बना लेती तो अच्छा था।
तु सहना छोड़कर कहना, शुरू करती तो अच्छा था।।

इरादे कर बुलंद ...

तेरी आँखों में आंसू है, तेरे सीने में है शोले।[2]
तु इन शोलो में अपने,[2] गम जला लेती तो अच्छा था।
तु सहना छोड़कर कहना, शुरू करती तो अच्छा था।।

इरादे कर बुलंद ...

है सर पर बोझ जुल्मों का, तेरी आँखे सदानी थी।[2]
कभी आंखे उठाकर,[2] तेवर दिखा देती तो अच्छा था।
तु सहना छोड़कर कहना, शुरू करती तो अच्छा था।।

इरादे कर बुलंद ...

तेरे माथे पे ये आंचल, बहुत ही खुब है लेकिन।[2]
तु इस आंचल का इक, परचम बना लेती तो अच्छा था।।
तु सहना छोड़कर कहना, शुरू करती तो अच्छा था।।

इरादे कर बुलंद ...

कौन कहता है जन्नत इसे

✍कमला भसीन, हरदा

कौन कहता है, जन्नत इसे, [2]
हमसे पूछो जो घर में फसें। [2]

न हिफाजत, न इज्जत मिली, [2]
कर-कर कुरबानी हम मर गये। [2]
दुश्मनों की जरूरत किसे, [2]
जुल्म अपनो ने हम पे किये। [2]

कौन कहता है....

हमने हर शय सवारी मगर, [2]
खुद हम बदरंग होते गये। [2]
अपने हाथों बनाया जिन्हे, [2]
हाथ उनके ही, हम पर उठे। [2]

कौन कहता है....

घर के अन्दर भी गर मिटना है, [2]
तो सम्भालों ये घर, हम चले। [2]
जिसमें दिन-रात औरत जले, [2]
ऐसे घर से, हम बेघर भले। [2]

कौन कहता है....

वक़्त पुकारता है

उठो बहनों आज, वक़्त पुकारता तुम्हें
उठो बहनों आज, ले लो अधिकार
वक़्त की पुकार।।

उठो बहनों आज ...

कब तक सहोगी तुम, जुल्म खड़ी-खड़ी
कब तक रहोगी तुम, दूर खड़ी-खड़ी
थामों अब तलवार।।

उठो बहनों आज ...

तोड़ो दुनियाँ की बन्दिश, तोड़ो पाँवों की जन्जीर
हटाओं चेहरो से पर्दा, हटाओं फिजाओं से गर्दा
छोड़ो अब तकरार।।

उठो बहनों आज ...

तू लक्ष्मी, तू चण्डी, तू झालकारी है,
तू माँ बहन भाभी, दुनियाँ पे भारी है
हो शेर पे सवार ।।

उठो बहनों आज ...

मिलकर हम नाचेंगे गायेंगे

✍कमला भसीन

मिल कर हम नाचेंगे गायेंगे,
मिल कर हम खुशियाँ मनायेंगे। [2]
जिंदगी अपनी सजायेंगे, जिंदगी अपनी सजायेंगे।।

चिड़ियों से हम चहक ले आयेंगे,
महक हम फूलों से लायेंगे। [2]
चहकते महकते जायेंगे, चहकते महकते जायेंगे।।

चुस्ती हम शेहनी से पायेंगे,
फुर्ती हम हिरनी से लायेंगे। [2]
शक्ती हम फिर से बन जायेंगे, शक्ती हम फिर से बन जायेंगे।।

मौंजो से हम मस्ती ले आयेंगे,
पर्वत से हम हस्ती बनायेंगे। [2]
आलम हम खुशियों का लायेंगे,
आलम हम खुशियों का लायेंगे।।

जम के हम चीखें चिल्लायेंगे,
जुल्मों को हम जड़ से मिटायेंगे। [2]
सोतो को हम जा के जगायेंगे, सोतो को हम जा के जगायेंगे।।

दायरे हम अपने बढ़ायेंगे,
बहुतों से हम आंखे लड़ायेंगे। [2]
गीत हम दोस्ती के गायेंगे, गीत हम दोस्ती के गायेंगे।।

तोड-तोड के बंधनों को

✍ सुंदर सिंग

तोड तोड के बंधनो को, देखो भैया आते है,
तोड तोड के बंधनो को, देखो बहने आती है
आयेंगे जुल्म मिटायेंगे, ये तो नया जमाना लायेंगे.... ।। धृ।।

तारीकी को तोड़ेंगे, वो खामोशी को तोड़ेगें, हॉ मेरे भाई बहन,
अब खामोशी को तोड़ेगें, लाचारी और मौत को डर को पिछे छोड़ेगें,
हॉ मेरे भाई सारे डर को पिछे छोडेंगे, जुल्म अत्याचार से ऐका करके लडेंगे....
गया जमाना झुकने का जी अब गया जमाना झुकने का... ।। 1।।

छुआछूत से लडेंगे, वो भेदभाव को तोड़ेंगे, हॉ मेरे भैया जातिवाद से लड़ेंगे
हॉ मेरी बहनें अत्याचार से लड़ेंगी, बलात्कारी हैवानों को ऐकता से रौंदेगी
निडर आजाद हो जायेगी, वो ना सीसक सीसक कर रोयेगी... ।। 2।।

हॉ मेरी बहने रूढ़ियों को तोड़ेगी गंदी, अंधी प्रथाओ को तोड़ंगी और छोड़ेगी
ना ही मैला ढ़ोयेगी वो, ना ही तन को बेचेगी, अपमानित करने वाली जुबानो को खेचेंगी
गया जमाना डरने का जी अब, आया जमाना लड़ने का.... ।। 3 ।।

हॉ मेरे भाई अब भेदभाव को छोड़ेंगे, समानता के साथ अब नारीवादी बनेंगे।
बहनों को ना पिटेंगे, ना ही अत्याचार करेंगे,
अत्याचार ना झेलेंगे, अब एकता से रहेंगे, जुल्म करने वालों को अब आड़े हाथों ले लेगे,
गया जमाना छुआछुत का जी अब, गया जमाना भेदभाव का...।। 4 ।।

संगठन बनायें और मिलकर सारे लड़ेंगे, ब्राह्मणवाद और पितृसत्ता को मिलकर पीछे छोड़ेगे।
पूंजीवाद लुटपाट से मिलकर सारे लड़ेंगे, समता को हम लायेंगे, और लोकतंत्र बचायेंगे,
आयेगा जमाना समता का जी अब, आयेगा जमाना जनता का... ।। 5।।

जमाना आयो चेतन को...

✍ साभार इप्टा से कुछ बदलाव के साथ

बहना चेत सके तो चेत, जमाना आयो चेतन को.....
चेतन को जमानो चेतन को...
भैया चेत सके तो चेत, जमाना आयो चेतन को

एक दो तो पहला चेती, कुछ ना फर्को आयो
दो चार के चेतने से कुछ झनकारो आयो
गाव की सारी बहना चेती, गाव के सारे भैया चेते, दुनिया पलटो खायो....
बहना चेत सके तो चेत, जमाना आयो चेतन को

चेतना के चक्र गाव मे चेती सारी बहना
मिलकर बोले जोर जुल्म को ना सहना ना सहना
गाव की सारी बहना बोली,गाव के सारे भैया बोले संगठित अब रहना....
बहना चेत सके तो चेत, जमाना आयो चेतन को

चेतना के चक्र गाव मे चेते सारे भैया,
चेत रहे है गरीब सारे चेते मौसी भैया
गाव के सारे दलित चेते, गरीब आदिवासी चेते, परिवर्तन हो जायो...
बहना चेत सके तो चेत, जमाना आयो चेतन को...

चिड़िया बोलन लागी

✍ देवराम दमाडे, टिमरनी

बहना जागों हुयो भुनसार, चिड़िया बोलन लागी।
जुल्मो से छुटकारा पाओ, संगठन को अपनाओ
खोलों-खोलों हृदय का द्वार, चिड़िया बोलन लागी।

छोडो-छोडो रूढीवादी, होती रही है बरबादी।
संबिधान लेलो हथियार, चिड़िया बोलन लागी।

जागरूक सारे बन जावो, परेशानी तुम ना उठाओ।
मिलकर हो जाओ तैयार, चिड़िया बोलन लागी।

बाबा साहेब को जो तू भूला, समझों नसे मे है झुला।
चलना नही अब अकेला, झंडा लो लाल और निला,

बढ चला गरीबो का रेला, टुटेगा दुश्मन का किला
भीम से ही होगा बेडापार, चिड़िया बोलन लागी।

संगठन ताकत हमारी

✍ सुमन दमाड़े

संगठन ताकत हमारी जीजी बाई, संगठन ताकत हमारी...
जीजी बाई, संगठन ताकत हमारी...

एकता से ईमान बढत है,
चौमुख जिम्मेदारी, जीजी बाई,
संगठन ताकत हमारी... जीजी बाई...

एकता में भुनसार बसत है।
काटी देत अधियारी, जीजी बाई,
संगठन ताकत हमारी, जीजी बाई...

एकता से भय दूर भगत है
भय से सौ बिमारी, जीजी बाई,
संगठन ताकत हमारी जीजी बाई...

एकता से हर चोर डरत हैं
डरते है अत्याचारी, जीजी बाई,
संगठन ताकत हमारी जीजी बाई...

एकता से डर दुर भगत हैं,
साहस होय हजारी, जीजी बाई,
संगठन ताकत हमारी जीजी बाई...

एकता में ईन्सान जगत हैं,
जीवन होये सुखारी, जीजी बाई,
संगठन ताकत हमारी जीजी बाई...

हमारी ही आँखों में बसे संसार

✍स्वाति कैथवास

हमारे ही आँखों में बसे संसार
प्रेममय जीवन हमार द्वेशरहित हो।

चित्त शुद्ध हो, बोली बुद्ध हो
हमारे मन में, खौफ नहीं तो

जीवन प्यारा, मधूर उसे हम बनायें
पलके उठाकर अरमानों को सवारे।

झलकारी सा तेज ओर प्रेम मीरा का
जीवन को दे अपने, अब नई पहचान

निसर्ग की काया, भूमी की है माया
हम सबका चमकाना, ना ही है तरसना
आवो अब उठो चलो, दुनिया हमारी है
हिंसा बिना, सुकून वाला दिल बनाना है।

छोड़े जी रोना

✍आवा, नेपाल

छोड़े जी रोना और तड़पना
तुफानों में उडना सीखों जी बहना ।।धृ।।

मंदिल को छोड़ों,मंजिल को ढूंडो
खुद की किस्मत, खुद ही लिखों
नाही है, अब गिड़गिड़ाना ।।1।।

तुफानों ...

यहों ना किसी कि मालकिराना
ना ही हम है, किसी के जनाना
हम है साथी और हैयासना
हिंसा ना सहेंगे किसी भी बहाना ।।2।।

तुफानों ...

खुलकर बोलो खुलकर हंसों
सोने की गहना अब ना पहनना
स्वतंत्रता ही है हमारा गहना
आजादी हमारी है ये बहना ।।3।।

तुफानों ...

तुम्हारा साथ मिलने से

✍ कमला भसीन

तुम्हारा साथ मिलनें से, अहसासे कुव्वत आया है
नई दुनिया बनानें का, जुनूं फिर हम पर छाया हैं ।। धृ।।

कुछ तन्हा तन्हा मैं थी, कुछ तन्हाई तुम में थी
दोनो में थी लाचारी, दोनों ही थक के हारी
इजहारे राज करने से, घुटन को कुछ घटाया हैं
तुम्हारा साथ... ।। १।।

थोड़ा मैं तुमको समझी, थोड़ा तुम मुझको समझी
कुछ एसा लग रहा हैं, की प्यार हो गया हैं,
नये रिश्तों नये नातों, ने कैसा रंग जमाया हैं
तुम्हारा साथ... ।। २।।

हम ख्याल है जब हम तुम, हमसफर भी बन जायें
चाहे जैसे हो मौसम, इक दूजे को पनपायें
इन्हीं सपनों के रंगो नें हमें फिर गुदगुदाया हैं
तुम्हारा साथ..... ।। ३।।

(है अपना दिल तो आवारा' गीत की धुन पर आधारित)

मैंने सपना सुहाना एक देखा

मैंने सपना सुहाना एक देखा,
मूझे वांध सके न कोई रेख्व। [2]

दोडी ऐसी मैं तेज, जैसे पांव चले पानी की रेल रे।
मैं तो जी गई सबके सब खेल रे। [2]
दोडी ऐसी मैं तेज, जैसे पांव चले पानी की रेल रे।

बन गए मजबूत पैर, कर लू कोई भी सैर, [2]
बदलू मैं किस्मत का भी लेखा, मूझे बांध सके ना कोई रेखा.... हो हो

मुझे बांध सके न कोई रेखा,
मैनें सपना सूहाना एक देखा,
मूझे बांध सके ना कोई रेखा... हो हो।

छुने को आएगा हाथ उठाए,
मैने देखा तो पंख निकले हाथ में
कानों में जाके माँ को मंतर फुंका,
तुम भी चलो ना मेरे साथ मैं। [2]

पहुंचे हम दोनों जहां रोक ना-टोक ना वहां, [2]
राहे बनी हाथों की रेखा, मुझे बांध सके न कोई रेखा।
मैंने सपना सूहाना एक देखा, मुझे बांध सके न कोई रेखा।

पहुंची ओर भी आगे जहां, खिल-खिल उठा ये दिल ढोल के,
कूछ भी पढ़ने को दिल के दरवाजे खोल के। [2]

ठान लू जो भी मन मे कर भी लू,
इसी जीवन मे सपना सच होने वाला देखा।
मुझे वांध सके न कोई रेंखा । [2]
मैने सपना सूहाना एक देखा, मुझे बांध सके न कोई रेखा।

नारी गुहार गीत

हॉथ जोड़कर नारी बोली,
रोज -रोज का लौ सइये,
कईये तो की से कइये

1. सइये हम कालो अन्याय,
न सइये तो किये सुनाये,,
जी से जा झांझट मिट जाय,,
नइयां कोई सुनइया जब में जी से जा विपदा कईये

2. घर से करत पिया मनमानी,
रात न देती नन्द जिठानी,,
मुश्किल घर में खाना पानी,,
छीकत नाक कटत है घर में कालो हम चुपके रइये

3. जग में बुइयक भये औहारी।
सबनें मोरी खबर बिसारी।।
भई हतास आज की नारी ।।
नारी जात सताई हर दिन रजक,, समझ
मन में लइये- कइये तो किसे

नारी का ये भाग्य विधाता

✍महेश प्रसाद रजक, छतरपूर
म.प्र. आपदा निवारण मंच

तर्ज– बेटी का ये भाग्य विधाता टूने कैसा।

मर्ज– नारी का ये भाग्य विधाता – तूने कैसा बनाया।
है नारी सृष्टि की रचना नारी को ही सताया है।

नारी का ये भाग्य...

सीता जैसी नारी को रावण ने सताया है
अरे राम से पुरूष ने उसे अग्नि में जलाया है।

नारी सृष्टि की रचना नारी ...

अहिल्या जैसी नारी को देव इन्द्र ने सताया है।
उसके पति ने उसकी पत्थर का बनाया है।।

नारी सृष्टि की रचना नारी ...

द्रोपती जैसी नारी, को दुशासन ने सताया है।
पाँच पती ने उसको जुएँ में लगाया है।।

नारी सृष्टि की रचना नारी ...

आज की नारी भी हर पल सताई जाती है।
पल पल वो उठकर डटकर मुकाबला करती है।।

नारी का ये भाग्य...

हम नील गगन के पंछी

✍डॉ. गोपाल नारायण आवटे

हम नील गगन के पंछी ...
कोई पिंजरे में नही रहते।
हम बहती जलधारा हैं
रोके से नही रूकते ।
हम नील गगन के पंछी...।
आकाश से हम विशाल हैं
बांधे से नहीं बंधते।
हम नील गगन के पंछी ..।
हम बहते मस्त समीर हैं
थामे से थमते नहीं।
हम नील गगन के पंछी ...।
हम हिमालय से ऊंचे है
झुकाने से झुकते नहीं ।
हम नील गगन के पंछी...।
हम देशवासी सब एक है
भटकाने से भटकते नहीं।
हम नील गगन के पंछी...।
हम हिम्मत वाली सन्तान हैं
किसी से हम डरते नहीं।
हम नील गगन के पंछी...।
हम भारतवासी एक हैं
हम एक हैं, हम एक हैं।
हम नील गगन के पंछी।
कोई पिंजरे में नही रहते।।

छोटी-छोटी आँखों में सपने

✍डॉ. गोपाल नारायण आवटे

तारा रा- त रा रा रा...।
तारा रा- त रा रा रा...।।

छोटी-छोटी आँखों में बड़े-बड़े सपने।
दुनियाँ बदलने के रंगीन सपने ।।

सबको घर मिले, सब को शिक्षा।
सब की झोली में हो खुशियाँ।
भर पेट भोजन के रोटी जैसे सपने।।

छोटी-छोटी आंखों में ...

भूखा रहे ना कोई, ठण्ड से मरे न कोई।
तपती धूप में सब को मिले छैंया।
सब को सुविधा मिले, देखें-प्यारे सपने।

छोटी-छोटी आंखों में ...

सब को हक मिले,सब हाथो को काम।
सब की मुट्ठी में मेहनत का हो दाम।
मेहनत के बदले इज्जत भरे सपनें।

छोटी-छोटी आंखों में ...

छोटा ना बड़ा कोई, ऊंचा ना नीचा कोई।
सब एक हो रहे, देखें एकता के सपने।।

छोटी-छोटी आँखों में बड़े-बड़े सपने।
दुनियाँ बदलने के रंगीन सपने।।

छोटी-छोटी आंखों में ...

हम फूल जैसे बच्चे

✍डॉ. गोपाल नारायण आवटे

हम फूल जैसे बच्चे
हम में है बड़ा दम
देते है सब को खुशियां
नही देते किसी को ग़म।।
हम फूल जैसे बच्चे...

लिखते है समाचार
पूछते है हाल चाल
अफसर हो या नेता
हम भी नहीं है कम।।
हम फूल जैसे बच्चे...

निडर हो कर कहते
सब बातें सच्ची सच्ची
उम्र भले हो कच्ची
रखते है दमखम।।
हम फूल जैसे बच्चे...

लाख परेशानी आये
तूफां हो खड़े
हम आगे बढ़ते जायें
सोचते हर दम।।

हम फूल जैसे बच्चे...
हम में है बड़ा दम।।

बेटी हूँ मैं

✍राजस्थान महिला संगठन

बेटी हूँ मैं....
बेटी हूँ मैं, बेटी मैं तारा बनुँगी
तारा बनुँगी मैं सहारा बनुँगी

बेटी हूं...

गगन पे चमके चंदा मैं धरती पर चमकुँगी
धरती पर चमकुँगी मैं उजियारा बनुँगी

बेटी हूँ ...

लिखुंगी, पढुंगी मैं मेहनत भी करूंगी
अपने पावो चलकर दुनिया को देखुँगी
दुनिया को देखुँगी में दुनिया को समझुँगी

बेटी हूँ...

फूल जैसी सुंदर, बागों में खेलुँगी
तितली बनुँगी मैं हवा को चुमुँगी
हवा को चुमुँगी मैं नाचुंगी गाऊँगी

बेटी हूँ...

शिक्षा की रेलगाडी

(तर्ज–रम पम पा परा परा रम पम पा पा)

✍सुंदर सिंग

शिक्षा की रेलगाडी, चलती चले घडाडी
आवो रे सारे बैठो, आ जाओ सब सवारी
तूम पिछे नही रहना, चढ़ना है तूमको चढ़ना

चिंता ता चिता चिता...

है भीम जी का कहना, आगे ही आगे रहना
पढना है अपनी पुंजी, ना राह कोई दुजी
ये शेरनी का दुध है, जो पीये वो दहाड़े
बाधाओं को ये तोड़े, जुल्मो को फेंक फाड़े

चिंता ता चिता चिता...

माँ का बनों सहारा, पढ़कर बनों सितारा,
आसमान में चमकना, संसार मे दमकना
पापा का ध्यान रखना, मम्मी को प्यार करना
आगे ही आगे बढ़ना, हक के लिए भी लढ़ना
किसी को ना तुम रूलाना, समाज ना भुलाना

चिंता ता चिता चिता...

बाल भीम समूह

स्वाति

BBS आया ओ BBS आया,
बाल अधिकार संग लाया
सुरक्षा अधिकार और विकास के साथ
जीने का अधिकार और सम्मान लाया ।। ध्र ।।

शिक्षा अधिकार कभी ना छुटे
घर अधिकार कभी ना टुटे
आरोग्य अधिकार सभी का हो
संविधान से सब साथ लाया।। 1।।

BBS आया...

बाल स्त्री हत्या सहन ना करो
टॅफिकींग को कुरूपता सहन ना करो
बालमजूरी एक गंदा दाग है
उसके खिलाफ हमने अभियान चलाया।। 2।।

BBS आया...

कौन है ऐसे रोके जो हमे
छुआछूत और भेदभाव करें जो हम से
शिक्षा लेकर संघटित होने के बाद
संघर्ष ही करेंगे ये नारा लाया ।। 3।।

BBS आया...

निर्णय प्रक्रिया एक झूठ है
बच्चों का स्थान उसमें शून्य शून्य है
सहभाग का अधिकार हमें भी है
उसको हमने सीआरसी के कलमो में पाया।। 4।।

BBS आया...

देख के बोलो कौन सी गाड़ी

✍अजय सहारे

छुक-छुक, छुक-छुक [2]
देख के बोलो कौन सी गाड़ी, अरे..... देख के बोलो कौन सी गाड़ी
रेल गाड़ी, रेल गाड़ी, जोर-जोर से आती है।
कभी वहां से आती है, कभी यहां से जाती है। [2]

पोंम-पोम, पोम-पोम [2]
देख के बोलो कौन सी गाड़ी, अरेदेख के बोलो कौन सी गाड़ी
मोटर गाड़ी, मोटर गाड़ी, जोर-जोर से आती है।
कभी वहां से आती है, कभी यहां से जाती है। [2]

ट्रिन-ट्रिन, ट्रिन-ट्रिन [2]
देख के बोलो कौन सी गाड़ी, अरे.....देख के बोलो कौन सी गाड़ी
साईकल गाड़ी, साईकल गाड़ी, जोर-जोर से आती है।
कभी वहां से आती है, कभी यहां से जाती है। [2]

पढ़ो-पढ़ो, लिखों-लिखों [2]
देख के बोलो कौन सी गाड़ी,
अरे.....देख के बोलो कौन सी गाड़ी
एक्जाम गाड़ी, एग्जाम गाड़ी, जोर-जोर से आती है।
कभी पास कर जाती है, कभी फेल कर जाती है। [2]

जयभीम, जयभीम [2]
देख के बोलो कौन सी गाड़ी, अरे.....देख के बोलो कौन सी गाड़ी
भीम गाड़ी, भीम गाड़ी , गाड़ी, जोर-जोर से आती है।
अधिकार हमें सिखाती है, स्वाभिमान समझाती है। [2]

चल ओ तारा चल ओ मोरा चल ओ

स्वाति

चल ओ तारा चल ओ मीरा, चल ओ मेहरुन्निसा
आगे बढेंगे–आगे बढेंगे, लिखेंगे एक नया किस्सा।

सहेलिया जब मिलके गायें, रोशनी जैसी जगमगायें,
देश मे फैले उजाला, उसमें हमारा हिस्सा।

शाला में खेलेगे हम [2] उमंग से आओ तो बढ़े हमारा किस्सा,
शाला मे पढके आगे बढके, लिखेगें नया किस्सा। [2]

शाला मैं है कितना मजा, दिल हो जाऐं तरोताजा,[2]
विज्ञान सीखे भुगोल सीखें, करे ना कोई गुस्सा।

हम है जहां हम है किशोरी

हम है जहां, हम है किशोरी, [2]
खुशियां ही खुशियां, लाएंगे वहां। [2]

सुन री सहेली हम है किशोरी
चल निकला हमारा कारवा
दूर है मंजिल चलना है जरूरी
मिलके मनाएगे रंगीन आसमा,
हम हे किशोरी हम है जहां। [2]

हमारे दिल मे उमगे हजारे [2]
होगा हमारा भी सपना साकार [2]
सुन री सहली, नहीं तु अकेली [2]
संग लेके चलेंगे सारी सखियां [2]
हम है किशोरी हम है जहां [2]

मुड़के न देखे आगे ही बढ़ना [2]
जहां को दिखाएगें हमारी खुबियां [2]
सुनरी सहली भरेंगे उडान [2]
दूनिया को देंगे हम नई पहचान [2]
हम है किशोरी हम है जहां [2]

मैं तो नाचूंगी

स्वाति

ढुमक मे तो नाचुंगी, मेरी सखियों के दिल मे
उमंग भरी सहली मेरे दिल मे उमंग है भरी–[2]

सखियों के संग–संग शाला मे जाऊंगी–[2]
सखियों के संग–संग शाला मे पढने मे जाऊंगी–[2]

ऐसी लगन मोहे लागी रे हा हा हो हो वो तो लागी–लागी
सहेली मेरे दिल मे उमंग हे भरी–[2]

सखियों के संग–संग साइकील चलाऊंगी–[2]
सखियों के संग–संग पतंग उडाऊंगी

ऐसी आशाऐं अब जागी रे, वो तो अब जागी रे
हो हो वो तो अब जागी रे

मेरी सखियों के संग उमंग हे भरी
सखियों के संग–संग नाचूगी गाऊँगी, सखियों के
संग–संग नाचुंगी गाऊँगी –[2]

प्यार की बंसी अब बाजी रे हो.. हो...
हा बाजी रे हो... वो तो वाजी रे

भीमराव की बेटी

✍ **शंकर ओनकर**

बेटी बनना ना लाचार तू है, भीमराव की बेटी
भीमराव की बेटी हूँ है,ज्योतिराव की बेटी

कोई अगर न पढ़ने देता, लेकिन तू तो पढ़ना
कोई अगर ना बढ़ने देता, लेकिन तू तो आगे बढ़ना
तेरा होगा सम्मान, तु है भीमराव की बेटी
बेटी बनना ना लाचार...

तू मारझोड ना सहना, और आग से ना जलना
तू फांसी से ना मरना , सदा साहस से तू रहना
न सहना जूल्म और अपमान तु है भीमराव की बेटी
बेटी बनना ना लाचार...

तू चूप से जूल्म ना सहना, ये कहके आगे बढ़ना
घार जमीन पर तेरा हक है, ये हक से तू अब कहना
तू भी है सच्ची हकदार तु है, भीमराव की बेटी
बेटी बनना ना लाचार...

कोई सुनता है गुरू ज्ञानी

✍संकलन-बाबूलाल जी, दलित अधिकार अभियान सिहोर

कोई सुनता है गुरू ज्ञानी गगन में आवाज
हो रही झिणी-२

ओहंग सोहंग बहा बजारे बाजे त्रिकुटी शब्द निसाणी।
अरे इंगला-पिंगला बहा सुखमणा सोवे सब ध्वजा फेराणी।।

वहा से आया नांद विन्द से, यहां जमावत पाणी।
सब घर पूरण बोली रहा है, सब अलक पुरूष निर्वाणी।।

वहा से आया पट्टा लिखाया, त्रिष्णा नहीं बुझाणी।
अमृत छोड़ पीसे रस पिये, उल्टी फास-फसाणी।।

देखा दिन जितना हो जग देखा, सहजे अमर निशानी।
कहे कबीर सुनों भाई साधो, अगम निगम की या बाणी।।

राम रहीम एक है

✍संकलन-बाबूलाल जी, दलित अधिकार अभियान सिहोर

दोहा – राम रहीमा एक है, मत समझो कोई दो अन्तर

भजन – साधु देखाऊ जग भोराना, साचे कहू तो मारण छावे
झुठा नग पथियाना।

१. हिन्दूरे कहता राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोऊ लड़-लड़ मरता, भरम कोई नहीं जाना।

२. बहुत मिले हमे नेमी रे धरमी, प्रात: करे सन्नाना।
आदम छोड़ पाषाण ही पूजे, जिनका थोथा हे ग्याना।।

३. आसन भार डिम्ब घर बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पितर-पाथर पुजन लागे, तिरथ बने गुलामा।।

४. माला पेरे टोपी पेरे, छाप तिलक अनुमाना।
साखी शब्द गावत भुले, मातम खर नहीं जाना।।

५. घर-घर मन्तर देत फिरत है, माया के अभिमान।
गुरू सहित सब शिष्य हो डुबे, अन्त काल पछताना।

६. बहुतक देखे पीरऔलिया पड़े है, किताब कुराना।
कहे मुदिन खबर बललावे उनहु खुदा नहीं जाना।।

कहत कबीरा सुन भई साधों...

बिना गुरू ज्ञान न पाया

✍संकलन-बाबूलाल जी, दलित अधिकार अभियान सिहोर

दोहा– बिना गुरू ज्ञान न पाया मोरे साधु भाई।
फोकट जनम गमाया हो, विरथा जनम गमाया हो।

जन भर कुंभ रहे जल माही बाहर भीतर वाके पाणी हो।
उलट कुंभ जन–जल ही समाना तब क्या कहेगा वह ज्ञानी।।

बीना करताल पखावद बाजे बीन रस नाचे गुण न गाया हो।
गावज हार को रूप नहीं, रेखा सदगुरू अलख लखाया हो।

हैरे अध: अहा सबहीन में दरिया तो लहर समाया हो।
हाँ जाल डालकर क्या करे ढिमर मिन को हो गयो पाणी

मिन की कोठ मीन मारण ढुंढे, सेना कोई पाया हो।
कहे कबीर सद्गुरू मिले पुरा तो भुले को रहे सताया हो।।

चेत रे नर चेत रे...

✍ संकलन-बाबूलाल जी, दलित अधिकार अभियान सिहोर

टेक– चेत रे नर चेत रे, थारी चिड़ियां चुग गई खेत रे..
नर नुगरा रे अरे अब तो मन में चेत रे।

प्यारे गुरू के नाम से आंटी रे।
अब कोन चढ़ावे थारी घांटी रे।।
नर नुगरा रे...

थारे गुरूजी बतावे भेद रे।
जा से छुटे जनम की केद रे।।
नर नुगरा रे...

थोड़ो समझ देखे ले, आंखी रे।
अब गादर खईगो, आंखी रे।।
नर नुगरा रे...

गुरू चरण दास की बाणी रे।
जिन्हें सार शबद पहचानी रे।।
नर नुगरा रे...

जरा धीरे-धीरे गाड़ी हॉको

✍संकलन-बाबूलाल जी, दलित अधिकार अभियान सिहोर

दोहा – धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे जी घड़ा, ऋतु आवे फल होय।।

टेक– जरा धीरे-धीरे गाड़ी हाको, मेरे राम गाड़ी वाले।
जरा हल्के गाड़ी हाकों, मेरे राम गाड़ी वाले।।
जरा धीरे-धीरे ...

गाड़ी म्हारी रंग-रंगीली, पहिया है लाल गुलाब। २
अरे हाकन वाली छैल छबीली, भाई बैठन वाला राम।।
जरा धीरे-धीरे ...

गाड़ी अटकी रेत में भाई, मजल पड़ है दूर।
ऐ धरमी-धरमी पार ऊतर गई, पापी चकना चूर।।
जरा धीरे-धीरे ...

देश-देश का वेद बुलाया, लाया जड़ी और बुटी।
जड़ी बुटी तेरे काम न आई, जब राम के घर से टूटी।।
जरा धीरे-धीरे ...

चार जना मी माथो उठायो, बांधी काँठ की घोड़ी।
लजा के मरघट में रख दी, फुंक दी जैसे होली।।
जरा धीरे-धीरे ...

बिलक-बिलक कर त्रिया रोए, बिछड़ गई मेरी जोड़ी।
ऐ कहे कबीर सुनो भाई साधु, जिन जोड़ी उन तोड़ी।।
जरा धीरे-धीरे ...

सतमार्ग दिखाना

(तर्ज–जब वो मरी, हिन जानकी आँखन..)

स्वाति

धर्म विगत होती धरा होत संत अवतार।
होता मानव, जाति का तभी कवे उद्धार।।

मर्ज– धन्य–धन्य ये धरा अन्य है, धन सतमार्ग दिखाना।
ओ रविदास आश है फिर से भारत में आ जाना।।

आ जाना भगवान यहां अन्धे को राह दिखाने।
छुआ छूत औ ऊँच नीच की खाइ आन मिटाने।।

गले मिले मानव से मानव ऐसा मंत्र बताना।
ओ रविदास आश है फिर से भारत में आना।।

दे देना वह महामंत्र जिससे सदगति हो जाये।
आ जाये सुख शान्ति, देह में ऐसा ज्ञान बताये।।

मन चंगा करने वाली वह गंगा तो जाना।
ओ रविदास आश है, फिर से भारत में आ जाना।।

मन संतमणि, संत शिरोमणि, कर्मा, राहू के प्यारे।
रविनंदन रविदास, हमारी हो आँखन के तारे।।

करियों कृपा के सर से न निज हाँथ हटाना।
ओ रविदास आश है, फिर से भारत में आ जाना।।

पंडित ने ली परीक्षा

दोहा– गुरू की दीन्ही भेट जब गंगा जी जाय।
दोन्ह कंगन गंगा माँ पंडित लीन चुराय।।

उस कंगन की जोड़ हित तपने किया उपाय।
गंगा जी से जायकर कंगन लाव भगाय।।

कविता

नृप को आदेश सुनो पंडित तैयार भयो।
गंगा किनारे आन बचन ये सुनायो है।।

जाती है जान मात गंगे बचाइये कंगन की।
जोड़ मुझसे नृप ने मंगायो है।

होकर के प्रकट बोली गंगे माँ सुनो विप्र
कंगन की जोड़ जौत तुमने जौन मुंगायो है।

जाके रविदास से माँग लीसे विप्रवर।
जाकी भेट में मैनें कंगन गहयो है।।

दोहा– हो हतास पंडित चला गवो जहाँ रविदास।
कर प्रमाण रविदास को बैठो उनके पास।।

भेट आपकी दये से कंगन गंगा दीन।
सो दीन्हा न आपको मैंने खुद लै लीन्ह।।

धन्य-धन्य हों भारत माता

✍सलीम मन्सुरी
(जन साहस संस्था, देवास म.प्र.)

धन्य-धन्य हो भारत मय्या, धन्य महु जो गाव है।
देश दुलारा सपुत प्यारा प्रकट हुए भीमराव है,
प्रकट हुए भीमराव है।।

पढाई करते वक्त भीम को, कई मुसिबत आई थी।
छुआछूत का भेद देखकर, दिल में उदासी छाई थी।।
दिल में उदासी छाई थी।
कई डिग्रीया लेकर भीम ने, मिटा दिए सब घाव है।
देष दुलारा सपुत प्यारा, प्रकट हुए भीमराव है।
प्रकट हुए भीमराव है।

मंदिर में नही प्रवेश मिलता, पीडित थे दुखयारे।
कर सत्याग्रह महाड़ गांव में, भीम बने उनके प्यारें।
जात-पात के विरूद्ध जिसने, दिखलाए प्रतिवाभान है।
देश दुलारा सपुत प्यारा, प्रकट हुए भीम राव है।

संविधान थे सकल विश्व के, पुर्ण उसे अभ्यास किया।
भारत देश को बाबा भीम ने, सुन्दर सा संविधान दिया।
सुन्दर सा संविधान दिया।

उपकारी हम बाबा भीम के, उनको कैसे भुले हम।
बाबा भीम की विचार धारा, हम सबके दिल में रही हर दम।
हम सब के दिल में रही हर दम।
धन्य - धन्य हो भारत माता...

मन तुम भजले गुरू को नाम

टेक– मन तुम भजले गुरू को नाम ...
दया महर से नर–तन पायो, मत करना अभिमान
एक दिन खाली पड़ा रहेगा, जाये बसे सम्मान..
मन तुम भजले ...

जो धन तुमको दिया गुरू ने ऐसो करो कुछ काम
जो संसार रंग को सपनो, आन किया विश्राम..
मन तुम भजले ...

चार दिनों के सब है साथी अन्त ने आवे कोई काम
चार मिले बैठ करो सत्संगा, भजन भजन करो आठ आम..
मन तुम भजले ...

दया महर सतगुरू की नगर चड़जा त्रिकुटी धाम
कहे रविदास अगन के वासी पायेगा निज नाम...
मन तुम भजले ...

भजन बिन हीरा जनम गमायें

भजन बिन हीरा जनम गमायें
कभी न आया संत शरण में ने हरि के गुण गाया
जुत झुत मरा बैल की नाही सोया और खाया

भजन बिन हीरा...

जो संसार पेड़ सेमर को सुआ देख लुभ आया
मारी चोच कई अब निकली फिर धुन धुन पड़लाया

भजन बिन हीरा...

जो संसार हार बनिया के सब जग सौदा लियाया
चतरो ने माल चौगनो कीयो मूरख मोल गमाया

भजन बिन हीरा...

जो संसार माया को लोभी ममता महल बनाया
कहे रविदास अगम के वासी हाथ कछु नहीं आया

भजन बिन हीरा...

जनता मगन है

✍ बच्चे का संगठन, सागर

आदमी मगन है, औरत मगन है...
भीम राव में ऐसे.... ओमे जनता।

विधायक मगन है, सासंद मगन है..
भीम राव में ऐसे का गुण .... ओमे जनता..

तहसीलदार मगन है, थानेदार मगन है
भीमराव में ऐसे .... जी मे जनता...

सारा संसार के सब लोग मगन है...
भीमराव में ऐसे का गुण...

जी में जनता मगन है...
जनता मगन है...

लड़का मगन है लड़की मगन है...
जनता मगन है...

आज में चली पिया के देश

घर और दोर सबई मैंने छोड़े, छोड़े सकल नरेश
तिलक माल तुलसी की माला घरे होसमन भेष
आज में चली पिया के देश...

परम धाम सतगुरू की नगरी सुन्दर बसंत अनेक
सोहंग मंत्र जपे निस प्राणी सतगुरू के उपदेश
आज में चली पिया के देश...

सोहंग को कोई मरम न जाने, ने जाने कोई भेद
ब्रह्मा विष्णु आप करत है पार ने पाये शेष
आज में चली पिया के देश...

देवी देवता भौतक पूजे, पूजे सिद्ध गनेश
मीरा खो रविदास मिल गये कट गये कठिन कलेश।
आज में चली पिया के देश...

एक अनहोनी सी तुमको बतायें

टेक–चाम की कठौती में गंगा दिखायें

वामन भी मान गयें, ठाकुर भी मान गयें,
और अन्य जाति के, जे सब भी मान गयें।
काय भैया कैसी जे माया बतायें,
चाम की कठौती में गंगा दिखायें।।

जा बात राजा महाराज में पहुंची गयी,
लोहे को पल भर में सोना बनायें,
चाम की कठौती में गंगा दिखायें।।

एक कंगना है राजा के पास में,
जोड़ी मिलायें गुरू आये है आस में।
नही मिले जोड़ी तो फांसी लटकायें,
चाम की कठौती में गंगा दिखायें ।।

अरज करी रविदास गंगा पधार गई,
चाम की कठौती में कगना दिखाई दई।
चरणों में राजा और प्रजा समायें,
चाम की कठौती में गंगा दिखायें।।

राजा भी मान गयें प्रजा भी मान गई,
गुरू शिष्य की रिती में आप गए।
विरलें है संत ऐसें भगती बतायें,
चाम की कठौती में गंगा दिखायें।।